जीवन – एक पहेली

किसी ने आहिस्ता से आकर पूछा

''क्या तुमने जीवन को जाना है?''

मैं निस्तब्ध सी रह गई,

सोचा - जीवन क्या है ?

कुछ खुशियाँ कुछ गम

थोडा सा सुख थोड़ा दुख

कभी हँसना कभी रोना

कहीं आशा कहीं निराशा

एक अपना सा अनुभव,

जीवन और मृत्यू अटल सत्य हैं।

उसने कहा भूल भुलैया है।

कहाँ से आना कहाँ को जाना नहीं ?

यह तो एक मृगतृष्णा है।

पर क्या आज तक कोई इस

पहेली को सुलझा पाया है ?

तन्हाई

बहुत कुछ है देखा

बहुत कुछ है पाया

जिन्दगी ने हमें हर रंग दिखाया

गम है तो बस इतना

बहुत कुछ गँवाया

फिर भी न कोई साया

मेरे साथ आया

पीछे मुड़ कर देखो

तो बस (सिर्फ)है खामोशी

जिन्दगी तूने - ये कैसा सितम ढ़ाया

लेकर जीती हूँ ये आस

दुखों के पुल को कर के पार

मैं पहुँचूंगी उसके पास

जो मेरा हो - बस मेरा हो।